Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

07

नारी का बदलता स्वरूप और ममता कालिया का रचना संसार
[सपनों की होम डिलीवरी के संदर्भ में]

डॉ. रमा विनोद सिंह
सहयोगी प्राध्यापक हिन्दी -विभाग
महाराष्ट्र महाविद्यालय कला, वाणिज्य एवं विज्ञान मुंबई

स्त्री की सोच में बदलाव यह सबसे बड़ा परिवर्तन है आज उसकी मंजिल मर्द नहीं है ,न विवाह, न बच्चे ,न घर ,न शास्त्र सम्मत आदर्श स्त्री ।आज वह समाज में एक स्वतंत्र इकाई के रूप में अपने को स्थापित करना चाहती है ।दबाव और पुरुषों द्वारा निर्धारित नियमों, धर्मगुरु ,राजनेता या पत्रिकाओं द्वारा जो सामाजिक और नैतिक बाध्यता थोपी गई है कि घर -परिवार की सर्वाधिक जिम्मेदारी स्त्री की है ।इस पर विचार कर, शताब्दियों से यह भार ढोते-ढोते अब यह धीरज ही उसके पास नहीं बचा है कि वह दूसरों को द्वारा चलाई जाए ।उसने खुद को और अपने विचारों को स्वतंत्र उड़ान की इजाजत दे दी है ।अब वह बलात्कार को एक दुर्घटना मानकर उससे उबरने का मादा रखती है ,अत्याचार सहकर दस्यु कन्या बन अपने अपमान का बदला लेती है, मर्दाना औरत ,पर्दानशी औरत अविवाहित मां, बगैर विवाह के स्त्री -पुरुष का साथ रहना, समलैंगिक विवाह, लिंग परिवर्तन , कोख का अधिकार , माँ बने अथवा नहीं आदि विषयों पर खुद के निर्णय का अधिकार वह लेना जान गई है, किंतु यह डगर उसके लिए आसान नहीं है, आज भी व्यक्तिगत संपत्ति अधिकार वैध पुत्रों के लिए सुरक्षित है ।मर्द हमेशा वैध होता है ।औरत अवैध होती है, उसका बच्चा अवैध होता है ।आज भी हमारा कानून ऐसे ही राय रखता है वैध पुत्र आदमी का और अवैध पुत्र औरत का जब तक रहेगा ,स्त्री पुरुष समानता की सोचना बेमानी है। हमारे यहां स्थिति और भी चिंताजनक है ,आदिवासी समाज में स्त्रियों को भूमि पर अधिकार नहीं है। स्त्री पुरुष समानता की बात जब हमारा संविधान करता है तब संपत्ति पर परंपरा ,धर्म और संस्कृति के नाम पर दोहरा मानदंड क्यों ?स्त्री पुरुष समानता पर हमारे पुरुष प्रधान समाज की राय प्रायः नकारात्मक रही है और वह एक भी मौका नहीं छोड़ता औरत को अपमानित करने का तथा दोयम दर्जे का प्रमाणित करने का। कभी अल्प बुद्धि, बदचलन कहकर तो कभी संस्कारहीनता का तमगा चस्पा कर ।समय के साथ नियमों और रूढ़ धारणाओं में संशोधन की आवश्यकता बनी हुई है ,जिस पर मात्र हो -हल्ला मचाना नहीं ,गंभीर चिंतन -मनन के साथ एक नई दिशा देनी होगी।

आदर्श समाज की स्थापना हेतु आवश्यकता है सांस्कृतिक वैचारिक और सामाजिक क्रांति की, यह तभी संभव है जब पूरी गंभीरता से स्त्री -पुरुष संगठित प्रयास करें ।आज यदि विश्व पटल पर चंद औरतें अपनी पहचान बना सकी है ,तो उसके पीछे उनका अपना संघर्ष तथा परिवार के पुरुष वर्ग का सहयोग एवं प्रयत्न भी अवश्य रहा होगा ।स्वरूप में बदलाव के लिए संघर्ष की आवश्यकता है ।नारी सशक्तिकरण की आवश्यकता है ।उसे जागरूक और प्रेरित करने की जरूरत है। उसे प्रगति का अवसर पूरी ईमानदारी से देना होगा ।स्त्री इस मामले में पीछे इसलिए भी रह जाती है कि वह संघर्ष करें भी तो किससे अपने पति से ,पिता से ,ससुर से ,बेटे से, या भाई से सभी तो अपने हैं और जो अपने वर्चस्व को छोड़ना नहीं चाहते । कोमल हृदय नारी अपने स्वाभाविक गुणों के कारण अपनों की बेबसी ,कमजोरी और लाचारी के सामने विवश हो जाती है। उसका संघर्ष वही रुक -सा जाता है ।काश अर्जुन के समान कोई कृष्णा मिल जाता !अभी समर शेष है।

आज जीवन की सुख सुविधाओं के लिए धन की महत्ता पहले की अपेक्षा अधिक बड़ी है एक सामान्य मजदूर तक आज अपने जीवन के अभाव से समझौता करने की स्थिति में नहीं है उसका अपना मामूलीपन स्वीकार नहीं है। स्त्री भी इसी समाज में रहती है और वह भी अपने इतिहास के अंधेरे से निकल जाना चाहती है। बिना भाषा और अभिव्यक्ति के वह दशकों तक जीती आई है ।आज विश्व राष्ट्रीयता, भूमंडलीकरण तथा बाजारवाद के युग में उसको अपनी भाषा और अभिव्यक्ति की पुरजोर पहचान हुई है ।इस पहचान के पहले उसने बहुत सहा है और बेपनाह अपमान तथा ओढ़ी हुई जिंदगी जी है ।इस क्रम में एक पूरा -पूरा वर्ग उसकी व्यथाओं, प्रताड़नाओं का तमाशा बनता रहा है ।यदि किसी को सहानुभूति हुई भी है, तो सब कुछ जानते- समझते ,देखते महसूस करते हुए भी वे केवल सहानुभूति तक ही सीमित रहे हैं ।स्त्री की पीड़ाओं, यंत्रणाओं में नहाकर भी वे अंतरबाह्य रूप में सूखे के सूखे रह गए हैं ।आधुनिक समय में 20वीं सदी के प्रारंभ से 60 70 के दशक तक का आकलन करें तो हमारा पूरा समाज पुरुषवादी रहा है। उसके बाद के समयों में यहां तक की उत्तर आधुनिकता के दौर में भी ,पुरुष नियामक सत्ता स्त्रियों पर दबाव बनाए हुए रही हैं ,पर समाज के संस्कार और मानसिकता में रूढ़ियों के मकड़जाल भी कम नहीं रहे हैं ।इसलिए रूढ़ियों, अंधविश्वासों के हाथों स्त्रियों का शोषण अप्रतिहत रूप से होता रहा है ।न केवल अशिक्षित स्त्रियों का वरन पढ़ी -लिखी सुशिक्षित स्त्रियां भी इस शोषण -दमन से रहित नहीं रही है इस वर्चस्वधारी समाज में जहां विरोध का स्वर भी उठाना असंभव था, वहां विद्रोह की तो कोई संभावना भी नहीं थी|

साहित्य और समाज का संबंध रचनाकारों द्वारा यथार्थ परिस्थितियों का आकलन करना होता है ममता कालिया के कहानी संग्रह में नारी पात्र अस्तित्वविहीन होकर अपने अस्तित्व की तलाश में लगातार संघर्ष कर रही हैं आज की नारी पुरुष के समक्ष ही नहीं अपितु अनेक क्षेत्रों में अपना वर्चस्व को स्थापित करने की तलाश में है ।नारी ने अपनी मेहनत द्वारा अपने अस्तित्व को एक अलग पहचान दी है । वे

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

परंपरागत रूढ़ियों को तोड़कर आगे बढ़ रही है। वे किसी प्रकार का शोषण व अत्याचार को सहन नहीं कर रही हैं बल्कि अन्याय के खिलाफ पूर्ण रूप से संघर्ष करती हुई नजर आ जाती है ।ममता कालिया के कहानी संग्रह 'मुखौटा' में नारी अपने अस्तित्व की तलाश कर रही है। जिसका वर्णन विभिन्न कहानियां द्वारा किया गया है ।ममता कालिया के मुखौटा कहानी संग्रह की कहानी चीरकुमारी में नारी अपने स्वतंत्र विचारों द्वारा अस्तित्व को तलाश रही है। इसी कहानी संग्रह की कहानी 'प्रतिप्रश्न' में महिमा नायिका का अकेलापन अकेलेपन से जूझते हुए वह अविवाहित कामकाजी नारी होते हुए भी विवादा स्पद जीवन यापन करना। 'उत्तर - अनुराग' कहानी में खन्ना आंटी के पति की बेवफाई को सहन करते हुए भी अपने अस्तित्व को कायम न कर पाना । श्यामा कहानी में 'श्यामा' नायिका अपने पति द्वारा अत्याचार व शोषण को सहन करती हुई अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होना। सीमा कहानी की नायिका 'सीमा 'अपने द्वारा प्रताड़ित व दु:खों को सहन करती हुई अपने अस्तित्व अर्थात अपने स्व की पहचान बनाने के लिए संघर्ष करना ।

साहित्य को मानव मन की विशेष रमणीय अनुभूति कहा जाता है ।समाज में इसकी परिधि बहुत ही व्यापक विस्तृत होती है। कहानी एक प्रकार की कला होती है और इस कला का समाज से अलग होकर कोई महत्व नहीं रह जाता। इसमें जीवन को गहराई जानने व जीवन की वास्तविकता को जानने का अवसर मिलता है ममता कालिया के कहानी संग्रह में जीवन संबंधी समस्याओं का यथार्थ अंकन करते हुए अपनी कहानियों में उजागर किया है क्योंकि वह स्वयं नारी होकर नारी के दर्द को बयां कर सकती हैं। नारी अस्मिता का अभिप्राय नारी के सामाजिक व आर्थिक अधिकारों की प्राप्ति से है। वर्तमान समय में नारी ऐसे समय से गुजर रही है जहां पर उसका एक पाव घर से बाहर है और दूसरा रसोई के चौखट के अंदर है। समय की मांग के अनुसार नारी जीवन संबंधी समस्याओं को उभारा गया है, और नारी अस्मिता की तलाश की ओर अग्रसर करने का बीड़ा उठाया गया है ।ममता कालिया की कहानीयां भोगे हुए जीवन का यथार्थ है ।उनकी कहानियों में नारी समस्याओं को बड़ी गहनता के साथ प्रस्तुत किया गया है ।नारी जीवन का केवल प्रेम और विवाह तक सीमित नहीं है बल्कि आत्मविश्वास में वृद्धि कर समाज में अपनी अस्मिता की पहचान करना है। इन्होंने यह माना है कि नारी को अपने मानसिक स्तर में बदलाव लाना चाहिए,ताकि वह अपने अकेलेपन घुटन, मुक्ति की छटपटाहट की स्थिति से बाहर आ सके।

"नारी सशक्तिकरण के इस दौर में भारतीय नारी विषयक दृष्टि की प्रासंगिकता अब पूरे विश्व में सिद्ध हो रही है। नारी अब अबला प्रशिक्षित सुकोमला नहीं रही। बड़े-बड़े संघर्ष और चुनौतियां और संकटों में उसकी रचनात्मकता तथा शक्ति रूपा छवि अब विशेष रूप से उजागर होने लगे हैं ।वह दया, क्षमा, स्नेह,वात्सल्य की प्रतिमूर्ति तो है ही परिवार समाज तथा राष्ट्र के निर्माण और विकास में भी हर प्रकार से सक्रिय एवं समाहित दिखने लगी है।"

ममता कालिया हिंदी जगत की एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं ममता कालिया हिंदी साहित्य में एक सशस्त्र निर्भीक एवं यथार्थवादी महिला रचनाकार के रूप में प्रसिद्ध है उन्होंने अपनी महत्वपूर्ण लेखनी रूपी तलवार न केवल ज्वलंत समस्याओं पर ही चलाया बल्कि उन्होंने जीवन के छोटे-छोटे अनुभव एवं संघर्षो पर भी बड़ी सहजता एवं तीखे व्यंग के साथ चलाया है ।पिता द्वारा प्रदत्त साहित्यिक माहौल में रचनाकार ममता कालिया ने बचपन से ही कलम रूपी तलवार को चलाना सीख लिया जिसका सफल प्रयोग उन्होंने अपने भावी जीवन में किया यही कारण है कि उन्होंने 'एक अदद औरत', 'सपनों की होम डिलीवरी,' 'नरक दर नरक' इत्यादि अद्भुत तथा अनमोल साहित्यिक धरोहर की सृजन करता बनी।

स्त्री रचनाकार होने के कारण ममता जी ने स्त्रियों के जीवन अनुभव संघर्ष एवं पीना का सजीव चित्रण अपनी अनेक रचनाओं में सफलतापूर्वक किया है।

ममता कालिया का उपन्यास 'सपनों की होम डिलीवरी' आधुनिक शहरी जीवन पारिवारिक विघटन और मानवीय संबंधों की उलझन को उजागर करता है ।इसकी केंद्रीय पात्र रुचि शर्मा एक आत्मनिर्भर किंतु आंतरिक संघर्षों से जूझती महिला है। विवाह के बाद पति प्रभाकर के दुर्व्यवहार और अय्याशी से तंग आकर वह वह अलग रहने लगती है। वह मुंबई के ओशिवारा में एक फ्लैट लेकर पाककला के टीवी कार्यक्रम प्रस्तुत कर आर्थिक और सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर बनती है ।वह पाककला में किसी औपचारिक प्रशिक्षण के बजाय पारिवारिक अनुभव और विदेशी चैनलों से सीखी प्रस्तुति शैली के आधार पर सफल होती है। उसके नाम से पांच भाषाओं में अनुदित व्यंजन पुस्तक भी प्रकाशित होती है। रुचि शर्मा के जीवन में सर्वेश नारंग नाम का खोजी पत्रकार का प्रवेश होता है। सर्वेश पाककला में रुचि नहीं रखता लेकिन रुचि के कार्यक्रम पर आपत्ति भरा पत्र लिखकर उसका ध्यान खींचता है चैनल के आमंत्रण पर वह कार्यक्रम में आकर व्यंजन को सरल और सुपाच्य बनाकर दिखाता है। इसी बहाने दोनों के बीच परिचय होता है फिर आपसी निकटता बढ़ती है दोनों ही अपने जीवन में एक जैसे अकेलेपन और जिम्मेदारियां से गिरे हैं रुचि अपने नशेड़ी पति प्रभाकर से अलग है और सर्वेश अपनी पत्नी मनजीत से ।दोनों के व्यस्क बेटे हैं जो नशे के गिरफ्त में है। प्रभाकर एक चरित्रहीन अय्याशऔर शराबी व्यक्ति है जो अपने बेटे गगन को भी गलत रास्ते पर ले जाता है। उसकी नजर में स्त्री केवल पुरुष की इच्छा का पालन करने वाली है ।नौकरानी के साथ दुर्व्यवहार ।बेटे को शराब पिलाना और पत्नी पर मानसिक अत्याचार उसके नैतिक पतन को दिखलाता है दूसरी ओर सर्वेश नारंग का बेटा अंश भी मां मनजीत की अपेक्षा और गलत संगत के कारण नशे में डूब कर मर जाता है ।यह दोनों स्थितियां आधुनिक परिवारों में माता-पिता की असफलता और बच्चे के बिगड़ते जीवन को रेखांकित करती हैं। रुचि शर्मा अपने बेटे गगन को बचाने की कोशिश करती है, लेकिन पिता के असर में गगन भी मां से दूर हो जाता है। अंतत :जब प्रभाकर उसे

घर से निकाल देता है तो वह मां के पास लौट आता है ।इस बीच रुचि सर्वेश को गगन के बारे में नहीं बताती, जिससे दोनों के रिश्ते में तनाव पैदा होता है। कैफे कॉफी डे में हुई बहस के दौरान सर्वेश का गुस्सा चरम सीमा पर पहुंच जाता है और वह सार्वजनिक रूप से रूचि का गला दबाने पर उतारू हो जाता है ।इसके बाद रुचि अपने बेटे की बुरी आदतों को देखकर उसे भी घर से निकाल देती है। गगन नशे की हालत में सर्वेश को मिलता है, जो उसे अस्पताल ले जाकर उसकी जान बचाता है। सर्वेश को गगन में अपना खोया हुआ बेटा अंश नजर आता है ।अंतत: सच्चाई सामने आने पर सर्वेश गगन और रुचि दोनों को अपना लेता है। इस उपन्यास के माध्यम से ममता कालिया ने दिखाया है कि आधुनिक जीवन में बाहरी सफलता और आत्मनिर्भरता के बावजूद भावनात्मक खालीपन और रिश्तो में तनाव बढ़ रहा है ।पारिवारिक विघटन उपभोक्तावाद और नशे जैसी समस्याएं आज के समाज की सच्चाई है। फिर भी लेखिका यह संदेश देती है कि आत्म सम्मान, जिम्मेदारी और संवेदनशीलता के साथ जीवन में सामंजस्य बनाकर संबंधों को पुनः स्थापित किया जा सकता है इस तरह 'सपनों की होम डिलीवरी' आधुनिक समाज का दर्पण और रिश्तो में संघर्ष के बावजूद आशा और पुनर्स्थापन का संदेश देने वाला उपन्यास बन जाता है।

उपन्यास का यह अंश दृष्टिगत है "नहीं जब तक अंश था एक रिश्ता तो था रिश्तो में इतनी जान होती है कि वह प्लेट प्यालो की तरह नहीं टूटे हम बार-बार उनमें पट्टी बांधकर काम चलाते हैं।" यह उपन्यास आधुनिक परिवार और टूटते -बनते रिश्तों की सामाजिक वास्तविकता को चित्रित करता है।रिश्ते प्लेट प् यालों की तरह तुरंत टूटते नहीं है ।चाहे उनके बीच दरारें आ जाएं ,हम उन्हें बार-बार जोड़ते हैं ताकि जीवन सुचारु रूप से चला रहे ।सर्वेश अपने बेटे अंश के माध्यम से अपने टूटते वैवाहिक संबंध के बावजूद किसी हद तक जुड़ा रहता है ।लेखिका यह मानवीय भावनाओं की जटिलताओं और रिश्तों के टिकाऊपन को उजागर करती है। रिश्तो के टूटने और जुड़ने की वास्तविकता को सहज और व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। भावनाओं और सामाजिक कर्तव्यों के बीच संतुलन को स्पष्ट किया गया किया मानवीय संवेदनाओं की गहराई को दर्शाने वाला सजीव उदाहरण है।

उपन्यास का एक अंश और भी महत्वपूर्ण है जो इस प्रकार है-:

"देख मेरी गल सुन। घर में भले ही घास फूस बनाओ, परोसते वक्त ओदे विच इक चम्मच मोहब्बत रला दो चीज़ आपे ही स्वाद हो जागी।"

रुचि शर्मा और उसके सास के बीच एक संवाद है, जिसमें भोजन में प्रेम और संवेदना के महत्व को उजागर किया गया है। आधुनिक जीवन में भौतिकता ने हमारे खान-पान को केवल पोषण तक सीमित कर दिया है ।भोजन केवल सामग्री से नहीं उसमें परोसे जाने वाले प्रेम और संवेदनाओं से स्वादिष्ट बनता है ।रुचि की सास यह उदाहरण देकर बताती है कि घर में साधारण भोजन भी प्रेम के साथ प रोसा जाए तो उसका स्वाद अद्वितीय हो जाता है। लेखिका या संदेश देती है कि जीवन में संवेदनाएं और प्रेम सबसे महत्वपूर्ण है ,भले ही साधन सीमित हो। भोजन केवल शारीरिक आवश्यकता ही नहीं बल्कि भावनात्मक अनुभव के रूप में दिखाया गया है। प्रेम और संवेदनाओं का महत्व रोजमर्रा की क्रियाओ में स्पष्ट है सामाजिक और मानवीय संदेश सरल और प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया गया है।

ममता कालिया का रचना- संसार आधुनिक नारी का "बिना फिल्टर" दर्पण है। सपनों की होम डिलीवरी इस बात का प्रमाण है कि नारी का स्वरूप निश्चित रूप से बदला है वह आर्थिक रूप से सशक्त और निर्णय लेने में सक्षम है यह बदलाव अधूरा है, क्योंकि सामाजिक संरचनाओं पितृ सत्ता और पुरुष मानसिकता अभी भी पिछड़ी हुई है ।असली होम डिलीवरी सपनों की नहीं बल्कि संवेदनाओं की होनी चाहिए जब तक रिश्तों में स्वीकृति और धैर्य नहीं होगा रुचि जैसी सफल नारी भी भीतर से 'बेघर' ही रहेगी। ममता कालिया की विशेषता यह है कि वह न तो नारी को कमजोर साबित करती हैं और नहीं उसे देवी बनाकर पीठ थपथपाती हैं वह उसे इंसान दिखती हैं गलतियां कमजोरी और उम्मीद के साथ।इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'सपनों की होम डिलीवरी' वास्तविक जीवन पर आधारित है यह घटना विदेश में घटित जीवन से प्रेरित होकर लिखा हुआ उपन्यास है। ममता कालिया जी ने नारी के संघर्ष को उसके आत्म सम्मान को बहुत ही मार्मिक ढंग से अपनी लेखनी सृजन क्षमता का परिचय दिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-:

1.ममता कालिया सपनों की होम डिलीवरी पेज नंबर 24 लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद 2016
2. ममता कालिया की कहानी भाग 1 प्रकाशक वाणी प्रकाशन दिल्ली फरवरी 2005
3. ममता कालिया पुस्तक की भूमिका वाणी प्रकाशन 2014
4. बीजापुर फमीदा 2004 ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्व विनय प्रकाशन कानपुर
5. कालिया ममता 2005 ममता कालिया की कहानी खंड एक वाणी प्रकाशन दिल्ली।
6. मीना विजेंद्र प्रसाद 2022 ममता कालिया के साहित्य की वर्तमान परिपेक्ष में उपयोगिता
7. पटेल पलक कमलेश भाई 2019 ममता कालिया के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना ज्ञान प्रकाशन कानपुर